श्रमणाचार्य श्री विमर्शसागर चालीसा

(रचियता : मुनि विचिन्त्यसागर)

दोहा

गुरु विरागसागर चरण, वंदन बारम्बार।
सच्ची श्रद्धा भक्ति से, गुरु विमर्श उर धार।।
शब्दों की सुमनावली, चरणों गुरु गुणगान।
चालीसा में कर रहे, गुरु 'विमर्श' यशगान।

चौपाई

छत्तिस गुण से मंडित गुरुवर, विमर्शसागर सूरी यतिवर।
परम वीतरागी जिन मुद्रा, दर्शन से टूटे चिर निद्रा।।
मार्ग शीर्ष वदि पंचम आई, गुरुवार का दिन सुखदाई।
पन्द्रह ग्यारह सन् तेहत्तर, जन्मे गुरु बुन्देली भू पर।।
नगर जतारा बजी बधाई, लखकर माँ भगवति मुस्काई।
पुत्र रतन तुमसा जब पाया, पिता सनत का मन हर्षाया।।
गौर वर्ण मूरत मनहारी, लगा मुक्ति वधु हुई तुम्हारी।
लेकिन जब तरुणाई आई, राग रंग परिणति मन भाई।
गुरु विराग का संग मनोहर, हो जैसे अध्यात्म धरोहर।
नगर जतारा दर्शन पाया, मन ही मन वैराग्य जगाया।।
फरवरि सत्ताइस पिचानवे, सिद्ध क्षेत्र आहार जानवे।
शांतिनाथ की मूरत प्यारी, गुरुवर बने बाल ब्रह्मचारी।।
तेइस फरवरि छियानिव आया, श्री गुरु से ऐलक पद पाया।
पूर्व नाम राकेश तुम्हारा, गूँजा अब 'विमर्श' जयकारा।
गुरु विराग दें शिक्षा-दीक्षा, पूर्व कर्म ले रहे परीक्षा।
अंतराय परीषह बन आये, 'अंतराय सागर' कहलाये।।
चतुर्मास सत्तानिव आया, भिण्ड नगर में उत्सव छाया।
जीवन है पानी की बूँद जब, कालजयी रचना प्रगटी तब।।

गुरुवर महाकवि कहलाये, महाकाव्य पहिचान बताये।
कमर लँगोटी लगती भारी, करली जिन दीक्षा तैयारी।।
पौषबदी एकादश आई, सोमवार मुनि दीक्षा पाई।
चौदह बारह सन् अठानवे, क्षेत्र वरासो भिण्ड जानवे।।
अध्यातम की ज्योति जलाई, समयसार की महिमा गाई।
वाणी सुन सब बने मुमुक्षु, करें प्रार्थना बनने भिक्षु।।
गुरु विराग ने क्षमता जानी, 'सुरीपद' देने की ठानी।
दो हज्जार पाँच सन् आया, गुरु विराग 'सूरीपद' गाया।
विद्वत जन आचार्य पुकारें, निस्पृह गुरुवर न स्वीकारे।
मन में था संकल्प निराला, गुरु बिन पद नहीं लेने वाला।।
वह भी शीघ्र घड़ी शुभ आई, गुरु की आज्ञा गुरु ने पाई।
राजस्थान धरा अति पावन, नगर बाँसवाड़ा का आँगन।
बारह-बारह दो हजार दस, रविवार दिन भक्त कई सहस।
मार्गशीर्ष सुदि सप्तमि उत्सव, सूरीपद का महामहोत्सव।।
गुरु विराग ने 'सूरि' बनाया, जन-जन ने जयकार लगाया।
गुरुवर जिस पथ राह गुजरते, जिनशासन के मेले भरते।।
'योगसार' प्राभृत है नीका, 'विमर्शोदयी' प्राकृत टीका।
लिख गुरु ने इतिहास रचाया, जिनश्रुत का सम्मान बढ़ाया।।
आगम अध्यातम का संगम, गुरुचर्या में दिखता हरदम।
शिष्यों को सन्मार्ग दिखाते, अनुशासन का पाठ सिखाते।।
शांत, सहज, अति सरल स्वभावी, हों गुरुवर तीर्थंकर भावी।
जब तक हैं ये चाँद सितारे, चिर आयुष हों गुरु हमारे।।

दोहा

गुरु चालीसा भाव से, पढ़े सुनें चित लाय।
परम यशस्वी हो यहाँ, परभव में यश पाय।।
गुरु भक्ति गुरु प्रार्थना, निश्रेयस सुखदाय।
जनम मरण को नाशकर, नर 'विचिन्त्य' फल पाय।।